केसी जोन्स

विलक्षण रेल इंजीनियर

केसी जोन्स

विलक्षण रेल इंजीनियर

आमुख

अमेरिकी इतिहास के सभी नायकों (हीरोज) में केसी जोन्स का एक विशेष स्थान है। कई लोक नायक काल्पनिक थे पर केसी जोन्स वास्तव में एक असली आदमी था।

केसी को रेलों से प्रेम था। उसे रेलगाड़ियों से प्यार था, और वो उनके बारे में सब कुछ जानना चाहता था।

उसकी ज़िंदगी की तमन्ना - रेलमार्ग पर एक इंजीनियर बनने की थी।

आज के युवा अंतरिक्ष यान में बैठकर अन्य ग्रहों पर जाने का सपना देखते हैं। लेकिन जब केसी जोन्स बड़ा हो रहा था, तो रेल लोकोमोटिव पर एक इंजीनियर बनना किसी लड़के की सबसे बड़ी इच्छा हो सकती थी। बाद में केसी, न केवल इंजीनियर बना, उसने खुद को एक बहादुर इंसान भी साबित किया।

रेलरोड की शब्दावली में "केसी जोन्स" का अर्थ होता है एक ऐसा इंजीनियर - जो बहुत तेज़-तर्रार हो।

केसी जोन्स का जन्म केसी नाम के शहर में हुआ। उसी से उसे अपना उपनाम मिला। शहर का नाम और केसी के नाम का उच्चारण एक ही था।

केसी का असली नाम जॉन लूथर जोन्स था। उसका जन्म 1864 में गृह-युद्ध के लगभग अंत में हुआ था।

उस समय अमेरिका में रेलमार्ग का ताना-बाना बुना जा चुका था। पर रेलगाड़ियां अभी भी कम थीं। उस काल में अधिकांश सामान नावों से ढोया जाता था। बहुत से शहर नदियों के पास बने थे इसलिए नावें ही लोगों के लिए आटा और चाय, कपड़ा, शीरा आदि लाती थीं। नावें, बाकी आवश्यकता की चीज़ें भी लाती थीं।

लेकिन गृह-युद्ध के बाद, रेलमार्ग बढ़ने लगे। और फिर वे बड़ी तेज़ी से बढ़े। फिर पूरे देश में रेलमार्ग फैला - पश्चिम में भी, जहाँ अभी भी जंगल थे और ताकतवर भैंसे घूमते थे।

जैसे-जैसे रेलमार्ग के ट्रैक का विस्तार बढ़ा वैसे-वैसे चीजें भी बदलती गईं। पटरियों और स्टेशनों के पास नए शहर बसने लगे। अब शहरों का नदियों के किनारों पर स्थित होना ज़रूरी नहीं था। अब मालगाड़ियों से सामान आता-जाता था। मालगाड़ियां देश भर में सीटी बजाती, भाप उड़ाती हुई घूमती थीं। कभी-कभी ट्रेन की पटरियों से किसी गाय को हटाना पड़ता था। उसके बाद ही ट्रेन आगे बढ़ पाती थी।

ऐसी भव्य ट्रेन पर इंजीनियर होना कितना मज़ेदार होगा?

केसी, पुआल के ढेर पर बैठकर महसूस करता था जैसे वो चमकते हुए रेल के इंजन में बैठा हो। वो खलिहान के जानवरों की ओर वैसे ही हाथ हिलाता जैसे ट्रेन के इंजीनियर लोगों को देखकर अपने हाथ हिलाते थे।

"तुम कहाँ हो, बेटा?" उसे पिता बुलाते, और फिर केसी को एक इंजीनियर होने की बजाए मुर्गियों को चुग्गा खिलाना होता!

संख्या बढ़ने से रेलमार्ग की समस्याएँ भी बढ़ीं थीं। भारी तूफान में अक्सर ट्रैक बह जाते थे। रेल डिब्बों को गर्म करने के लिए इस्तेमाल होने वाले स्टोव से कभी-कभी आग लग जाती थी। ट्रेन लुटेरे, रेल में सवार होकर, बंदूक लहराते हुए मुसाफिरों के पैसे लूटते थे।

"बाप रे!," केसी की माँ कहतीं, "मुझे समझ में नहीं आता कि तुम रेलमार्ग पर क्यों काम करना चाहते हो?" उन्हें वो काम सुरक्षित नहीं लगता था।

लेकिन जैसे-जैसे केसी बड़ा हुआ रेलमार्ग की स्थिति में भी सुधार हुआ। एयर-ब्रेक का आविष्कार हुआ, जो पुराने ब्रेक की तुलना में बेहतर था।
ट्रेंस में सुरक्षा बढ़ने के बाद ट्रेन डकैतियों में कमी आई। केसी ने अपनी मां से कहा, "रेलरोड हर दिन अधिक सुरक्षित हो रही है।"
"हम्म!" माँ ने कहा। वो बेचारी इस बारे में कर भी क्या सकती थीं? केसी की रेलमार्ग पर काम करने की प्रबल इच्छा थी।

बेशक, केसी रेलमार्ग पर सीधे इंजीनियर की हैसियत से काम शुरू नहीं कर सकता था। क्योंकि इंजीनियर का दर्ज़ा सबसे ऊपर होता था! शुरू में उसने उस वर्कशॉप में छोटे-मोटे काम किए जहाँ इंजन मरम्मत के लिए आते थे। केसी को वर्कशॉप में काफी मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती थी। लेकिन उसे लोकोमोटिव (ट्रेन इंजिन्स) के आसपास रहना पसंद था। शायद किसी दिन वो भी एक इंजन चालाक बने?
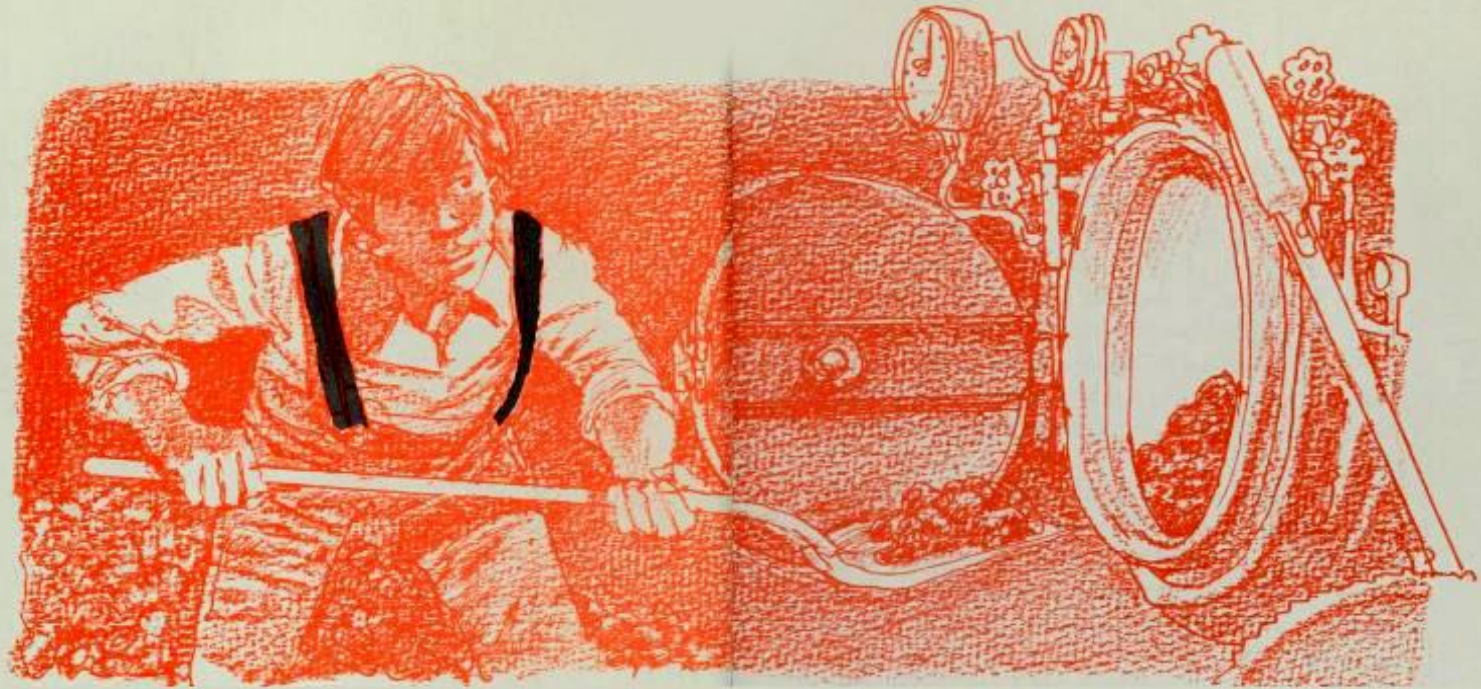
वर्कशॉप में कुछ समय काम करने के बाद, अगले दौर में केसी एक मालगाड़ी का फायरमैन बना।
उन दिनों फायरमैन को कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।
उसे इंजीनियर के साथ डिब्बे में सवारी करने का मौका मिलता था जो केसी को बहुत पसंद था। लेकिन वही उसकी एकमात्र अच्छी बात थी। ट्रेन के चलने के लिए किसी फायरमैन को बॉयलर के अंदर फावड़े से लगातार कोयला फेंकना पड़ता था।

अगर बॉयलर के पानी को गर्म रखने और भाप बनने के लिए पर्याप्त कोयला नहीं हो, तो ट्रेन समय पर नहीं पहुँच सकती थी। ट्रेन का समय पर पहुंचना बहुत ज़रूरी था। ट्रेनों को अपने निर्धारित समय पर ही स्टेशन पर पहुंचना चाहिए था। फायरमैन को हर मिनट काम करना पड़ता थी। केसी, पसीने से तर-बतर हो जाता था। लेकिन एक अच्छा फायरमैन, बाद में इंजीनियर भी बन सकता था।

शुरुआती यात्री ट्रेनें बिल्कुल भी आरामदायक नहीं थीं। लेकिन फिर भी लोग उनसे एक शहर से दूसरे शहर आते-जाते थे। वे लकड़ी के कठोर बेंचों पर बैठकर अपना खाना खाते थे, और अपने हाथों को स्टोव पर गर्म करते थे। बीच में कंडक्टर टिकट में आकर छेद करता था। अक्सर वहां बच्चे रोते थे।

कुछ ट्रेंस का सफर अल्पकाल का तो कुछ का सफर बहुत लम्बा होता था। पश्चिम के नए इलाकों में जाने वाले पायनियर्स भी अब ट्रेन से यात्रा करते थे। सब कुछ तेज़ी से बदल रहा था।

केसी, केंटकी में एक छोटा सा शहर था। वहां पर महिलायें बॉनेट पहनकर दुकान से सामान खरीदने जाती थीं! बच्चे धूल भरी सड़कों पर घोड़ों पर सवार होकर दौड़ लगाते थे। पर केसी का ट्रेन स्टेशन, शहर का सबसे महत्वपूर्ण स्थान था। निश्चित रूप से वो शहर का सबसे रोमांचक स्थान भी था। ट्रेन के आने पर बच्चे पटरियों के पास खड़े हो जाते थे और इंजीनियर का हाथ हिलाकर अभिवादन करते।

"लो, आ गई!" केसी स्टेशन की छत पर खड़ा होकर कहता।

वो आती हुए ट्रेन को सबसे पहले देखता था।

"वहाँ से नीचे उतरो," स्टेशन मास्टर उसे डाँटता। पर केसी उनकी बात अनसुनी कर देता। वह इंजीनियर की ओऱ हाथ लहराता था, और इंजीनियर उसकी ओर।
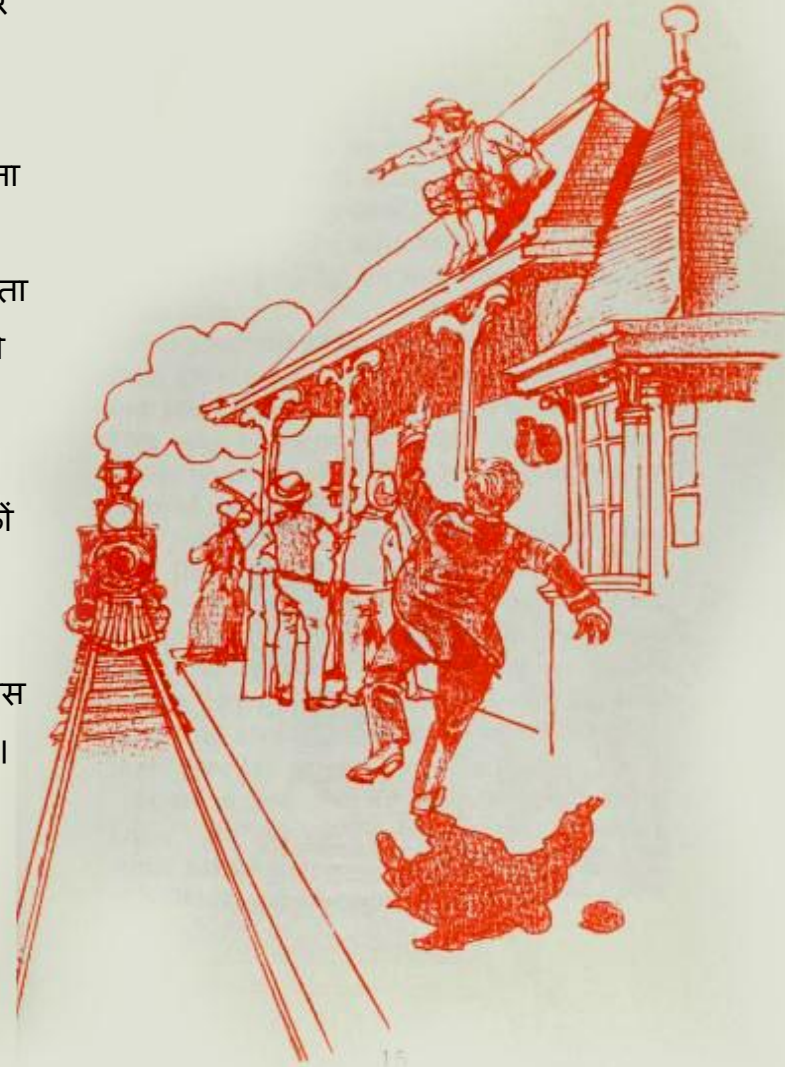
जब ट्रेन चली जाती तो उसके बाद बाकी बच्चे भी स्टेशन से खिसक लेते। उसके बाद ही केसी स्टेशन की छत से नीचे उतरता।

"चलो, अब घर जाने का समय हो गया है," स्टेशन मास्टर उससे कहते।

"बड़े होकर मैं एक इंजीनियर बनूँगा," केसी उनसे कहता।

"मैं भी," दूसरे बच्चे भी चिल्लाते। लेकिन उनमें से अधिकांश बाद में बैंक क्लर्क, किसान, स्कूली शिक्षक और सेल्समैन बने। उनके लिए यह ठीक भी था। पर केसी जोन्स, अपने जीवन में सिर्फ एक रेल इंजीनियर बनना चाहता था।

"चलो अब छत से उतरकर घर जाओ और वहां जाकर कुछ काम करो," स्टेशन मास्टर ने उससे कहा।

हाँ, और केसी को कई काम करने पड़ते थे। उसके पिता एक किसान थे। उसे खेत में फसल की देखभाल करनी पड़ती, बाड़े से अंडे इकट्ठे करने पड़ते और गाय को दूना पड़ता था। पर कैसी ने कभी भी ट्रेन का इंजीनियर बनने का अपना सपना नहीं छोड़ा। जब काला विशाल इंजन धुंआ छोड़ता हुआ पटरी पर भागता था तो वो दुनिया का सबसे अच्छा नज़ारा होता था। रात में ट्रेन की सीटी से मधुर कोई आवाज़ नहीं होती थी।

जब केसी 26 साल का हुआ तो उसे पहली बार लोकोमोटिव इंजन पर काम करने का मौका मिला। इंजीनियर बनने के लिए अभी उसकी उम्र कम थी। इस मुकाम तक पहुँचने में उसे दस साल का वक्त लगा था।

इलेनॉइस सेंट्रल लाइन पर काम करने वाले सभी रेल कर्मचारी केसी को जानते थे और वे उससे प्यार करते थे। जब उन्हें मालूम पड़ा कि केसी जल्द ही इंजीनियर बनेगा तब सभी लोग उसे बधाई देने आये और उससे हाथ मिलाने आये।
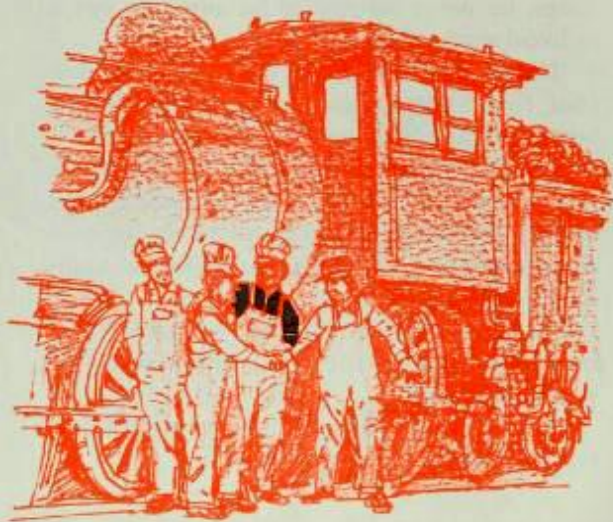
"ट्रेन को समय पर लाना, केसी!"

"यही मेरा उद्देश्य है," केसी ने वर्कशॉप के वर्कर्स, स्विचमैन और अन्य लोगों को जवाब दिया। वे सभी लोग भारी जूते पहने हुए थे।

"तुम्हें अपने लिए एक सीटी खरीदनी चाहिए केसी," यार्ड फोरमैन ने उसे याद दिलाया।

"मैं सबसे बढ़िया सीटी खरीदूंगा!" केसी चिल्लाया। उसका चेहरा उत्तेजना से चमक रहा था। वो लंबे समय से इंतजार इस दिन का कर रहा था।

उन दिनों इंजीनियर के लिए अपनी ट्रेन सीटी खरीदने का रिवाज था, इसलिए केसी ने अपने लिए एक फैंसी सीटी खरीदी। सीटी में छह पाइप थे, और जल्द ही केसी के मार्ग पर रहने वाला हर इंसान उसकी सीटी की आवाज को पहचानने लगा। जब केसी जोन्स की ट्रेन शहर से होकर गुज़रती, तो बच्चे, किसान,घर की औरतों को सीटी से ही उसके आने का सन्देश मिल जाता।
सीटी के अलावा, केसी तेज़ गति से ट्रेन चलाने के लिए भी मशहूर था। वो हमेशा ट्रेन को सही समय पर उसकी मंज़िल तक पहुंचता था।

जल्द ही वो कैंटन और मेम्फिस के बीच की "फास्ट मेल" ट्रेन चलाने लगा। वो ट्रेन - कैंटन, मिसिसिपी, मेम्फिस होकर टेनेसी जाती थी। और केसी जोन्स उस मेल ट्रेन का इंजीनियर था।
उसके लोकोमोटिव का नंबर 382 था, और वह गर्व के साथ उसकी देखभाल करता था। हर यात्रा के बाद बॉयलर बंद करने के बाद वो उसकी राख साफ़ करता था। वो उसके पीतल के उपकरणों को पॉलिश करके चमकाता था। उसके इंजन पर हमेशा ताजा पेंट होता था। इंजन चमचमाता था।
"केसी," उसके फायरमैन, सिम वेब, ने मजाक में कहा, "आप चाहें तो इंजन के फर्श पर बैठकर खा सकते हैं!"
और यह बात सच भी थी।

जब केसी ग्रामीण इलाकों से तेजी से होता हुआ निकलता, उसका एक हाथ हमेशा थ्रॉटल पर ही होता था। वह रास्ते में नंगे पांव खड़े लड़कों की ओर देखकर अपना हाथ हिलाता था। जब उसकी छह-पाइप की सीटी बजती तो पहाड़ियों से गूंजकर उसकी आवाज़ वापिस लौटती। सिम वेब, फावड़े से इंजन में कोयला झोंकता और फिर इंजन नंबर 382 पटरी पर फटाफट आगे बढ़ता।

अपनी उच्च सीट से, केसी मीलों दूर तक की भूमि देख सकता था। उसे इंजन के कैब में बैठना बेहद पसंद था। यह वह जगह थी जहाँ वह हमेशा से बैठना चाहता था। अगर आगे खराब मौसम मिलता या फिर खराब ट्रैक होते फिर भी केसी पूरी गति से अपनी ट्रेन चलाता और सही समय पर ट्रेन को स्टेशन पर पहुंचता।

28 अप्रैल, 1900 की रात को मौसम और पटरियां दोनों खराब थीं। तेज़ बारिश हो रही थी। लोहे की पटरी चमचमा रही थी, और भारी बारिश ने आगे की सड़क को धुंधला कर दिया था। अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। कैंटन से मेम्फिस तक की दूरी 188 मील की थी। रास्ते में तेज मोड़ थे और ऊपर की ओर चढ़ाई भी थी। अच्छे मौसम में भी वो कोई आसान यात्रा नहीं थी। केसी ने उस तेज़ बारिश में भी इंजन की यात्रा ज़ारी रखी और थ्रोटल को स्थिर रखा।

सुबह के समय मेम्फिस ट्रेन यार्ड में लोगों ने तूफान को देखा और कोहरे में लुप्त होती पटरी को देखा।

"लगता है कि आज वो समय पर नहीं आएगा?" उन्होंने एक दूसरे से कहा।

"केसी, हमेशा समय पर ही आता है," एक स्विचमैन ने डींग मारते हुए कहा। "यह बारिश उसे धीमा नहीं करेगी।"

पर वो "थोड़ी बारिश" नहीं थी, वो एक तूफ़ान था। उसमें तो पटरी भी बह सकती थी। पुलों के नीचे नदियां उफन रही थीं। बिजली हवा में कड़क रही थी।

"केसी सही समय पर ही आएगा," एक स्विचमैन ने अपने पाइप को चबाते हुए कहा।

अन्य लोगों ने हामी में अपना सर हिलाया।

"इस बार वो समय पर नहीं आएगा," उन्होंने कहा, "इस मौसम में तो बिलकुल नहीं।"

अब तक हलकी सी रोशनी होने लगी थी। जब लोगों ने दूरी पर 382 की हेडलाइट की रोशनी देखी तो वे ख़ुशी से चिल्लाये। "देखो, वह आ रहा है!" स्विचमैन ने अपनी टोपी हवा में उछाली। "देखो, वो आ रहा है!“

केसी बिल्कुल सही समय पर मेम्फिस पहुंचा। वो थक कर बिल्कुल चूर हो गया था। अब कैब से नीचे उतरकर वो खुश था।

"वो एक कठिन सफर था, केसी?" एक यार्डमैन ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा।

"मुझे पता है," केसी ने हंसते हुए कहा। वह एक ऊंचे कद का सुंदर आदमी था, लेकिन अब उसके चेहरे की थकावट साफ़ झलक रही थी। वो एक लंबी और भयावह रात थी। उसका फायरमैन भी उसके साथ-साथ यार्ड की ओर चला। उन्हें देखकर बाकी रेलकर्मियों ने हाथ हिलाकर उनका अभिवादन किया।

"तुमने बड़ी हिम्मत का काम किया, केसी!"

जो इंजीनियर कैंटन की वापसी यात्रा करने वाला था, वह बीमार था।
केसी ने रूखे बालों पर अपने दोनों हाथ फेरे।
वो पहनने के लिए अपने जूते उठा ही रहा था, इससे पहले कि दूत ने पूछा, "क्या तुम यह काम सकते हो, केसी?"
"सिम को बुलाओ," केसी ने दरवाजे से निकलते हुए कहा।

अब केसी को सबसे ज़्यादा अच्छी नींद की ज़रुरत थी। अब वो कल ही इंजन की जांच करेगा और पीतल को पॉलिश करेगा, और कैब के "फर्श को खाने" के लिए साफ बनाएगा।
उसने अपने जूतों को उतारा और फिर तुरंत सो गया।
पर केसी कुछ ही देर सोया होगा कि एक दूत उसके पास कोई सन्देश लेकर आया। केसी ने नींद से भरी आँखों को रगड़ा।
केसी ने उस उत्साहित दूत की बात सुनी।

ट्रेन यार्ड में केसी को पूरी भाप के साथ इंजन 382 मिला, जो चलने के लिए एकदम तैयार था।

"कम-से-कम बारिश तो बंद हो गई," केसी ने सिम वेब से मजाक में कहा। सिम, फावड़े से कोयला डालते-डालते तरह थक गया था। केसी का फायरमैन होने का उसे गर्व था, लेकिन पिछली रात बारिश में काम करते-करते वो थक कर पस्त हो गया था।

"हम हमेशा कल सो सकते हैं," केसी ने कैब सीट पर बैठते हुए कहा। तभी यार्ड का फोरमैन उनकी ओर आया।
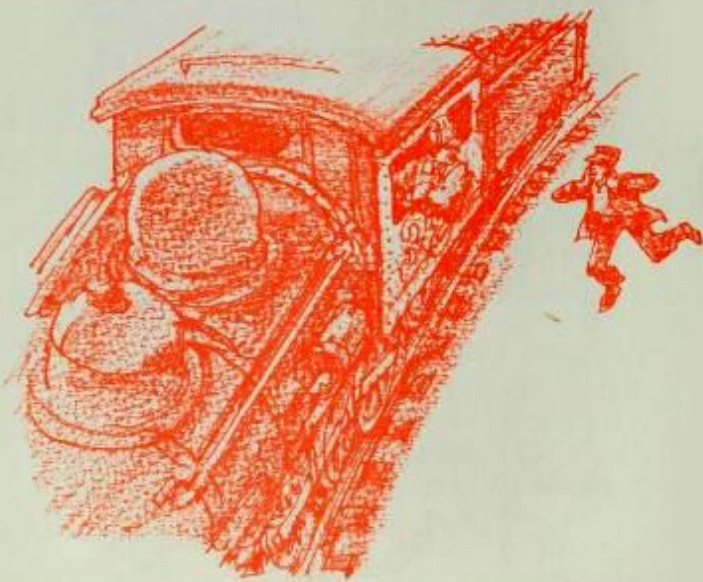
"केसी!" फोरमैन चिल्लाया, "तुम पहले ही समय से एक घंटा और पैंतीस मिनट लेट हो।"

केसी सिर्फ मुस्कुराया। वह अब खुद को इतना थका हुआ महसूस नहीं कर रहा था। मुझे 382 में वापस आना हमेशा अच्छा लगता है। उसने फोरमैन को सलाम करते हुए अपनी उंगलियों को माथे से छुआ। सलाम का मतलब था कि वो देरी को पूरा कर लेगा।
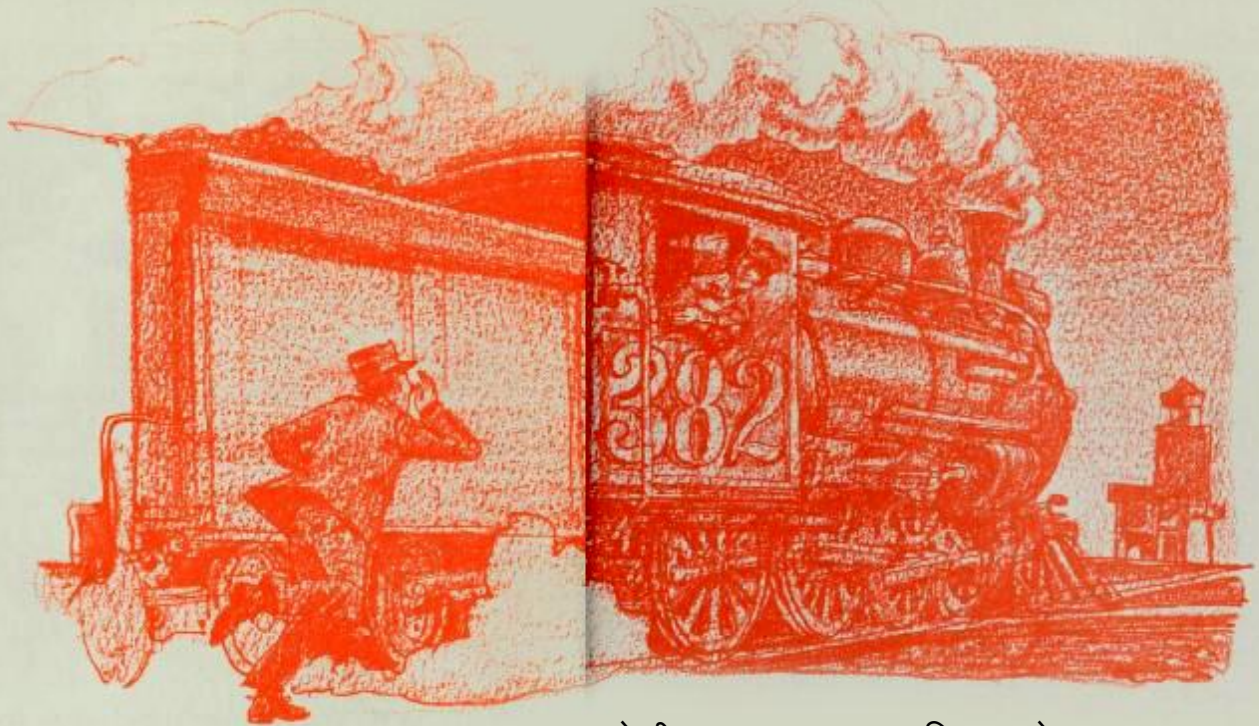
ट्रेन के पहिए घूमने लगे। केसी और सिम अब रेल की पटरी पर दौड़ रहे थे, उनके पीछे बारह डाक और यात्री डिब्बे थे।

फोरमैन इंजन के साथ कुछ देर दौड़ा। "केसी, आगे दो मालगाड़ियां हैं - उनपर नज़र रखना। उन्हें हम वॉन स्टेशन पर साइडिंग में खींच लेंगे।"

केसी न वापस अपना हाथ हिलाया। ट्रेन 382 अब बहुत तेजी से दौड़ रही थी और फोरमैन उतनी तेज़ी से नहीं दौड़ सकता था। फिर वो रुक गया और उसने डिब्बों की लंबी ट्रेन को अंधेरी रात में विलीन होते हुए देखा। जब 382 ने एक सिग्नल बोर्ड पार किया तो उसे केसी की सीटी सुनाई दी। अब ट्रेन बहुत तेज़ी से पटरी पर भाग रही थी।

"तुम भाग्यशाली हो!" फोरमैन ने कहा। पर तब तक केसी सुनने के लिए बहुत दूर जा चुका था।

ट्रेन 382 रात के अँधेरी में सरपट भागी। पहिए ने पटरी के जोड़ों पर किट-किट की आवाज़ की। चिमनी में से तेज़ी से भाप निकलती रही। सिम, भट्टी में कोयला डालता रहा, और केसी की सीटी सघन खेतों में लुप्त हो गई।

पचास! साठ! एक घंटे में सत्तर मील!

सरडी शहर में यात्रियों के उतरने लिए ट्रेन का एक स्टॉप था। ट्रेन 382 पहले ही कुछ समय कवर कर चुकी थी, और अब वो जल्द ही फिर से चल दी। सिम के चेहरे से पसीना टपक रहा था। उसकी मांसल भुजाएँ पसीने से तर-बतर हो गईं थीं। पसीने से उसकी कमीज़ पीठ से चिपक गई थी। वे अब देरी को कवर कर रहे थे।
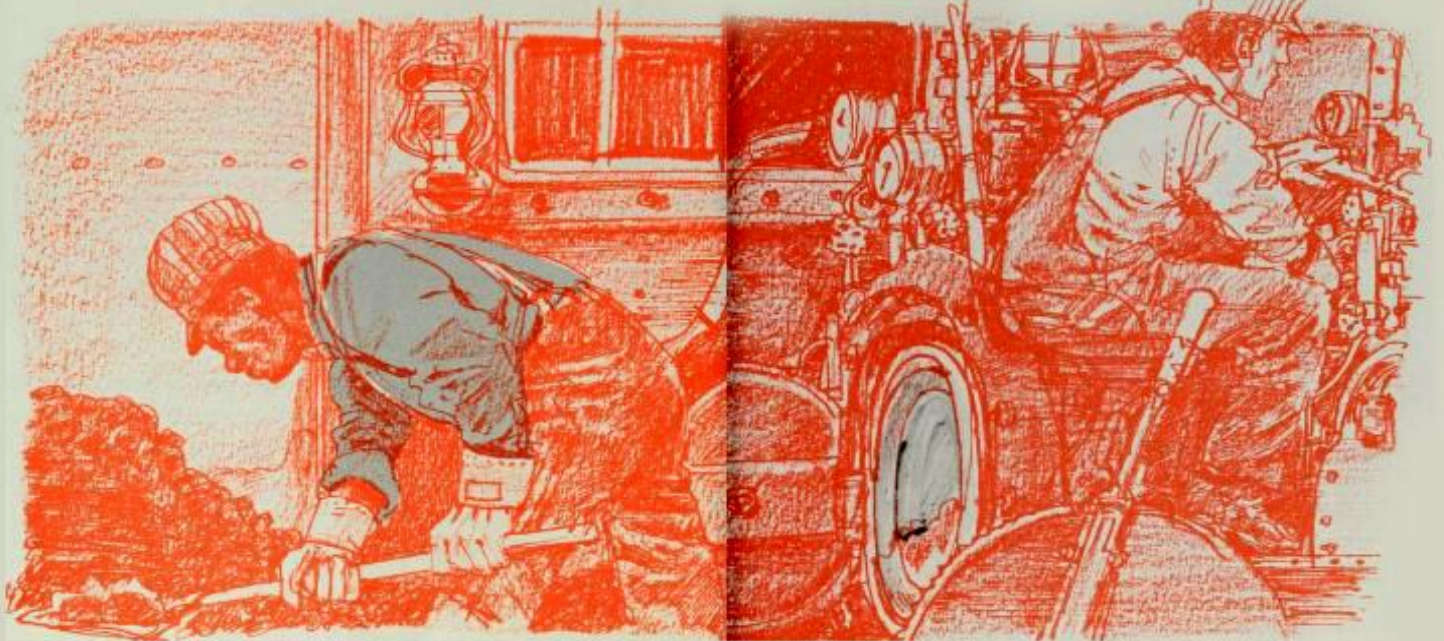
सत्तर! अस्सी! एक घंटे में नब्बे मील!

टेलीग्राफ के खंभे अंधेरे में तेज़ी से ओझल हो रहे थे। डिब्बे, अगल-बगल से खड़खड़ा रहे थे। ट्रेन के पहिये पुलों के ऊपर और स्विच पर तेज़ गति से गुज़र रहे थे। आगे पटरी साफ़ दिखाई दे रही थी।

अगले पड़ाव में केसी ने ट्रेन की देरी को काफी पूरा किया था।

अस्सी! नब्बे! एक-एक सौ मील प्रति घंटा!

जब वे वॉन पहुंचे तब वे लगभग समय पर थे।

"हम सही समय पर पहुंचेंगे, सिम!" केसी ने अपना हाथ थ्रॉटल पर रखते हुए कहा।

एक मालगाड़ी आगे की साइडिंग पर पहले ही मुख्य लाइन से हट गई थी। लेकिन जैसी ही दूसरी मालगाड़ी साइडिंग की ओर जा रही थी उसकी हवा की नली टूट गई। उसके ब्रेक जैम हो गए।

दो डिब्बे अभी भी मेन लाइन पर थे।

बहुत तेज़ी से ट्रेन चालक दल ने छलांग लगाई

और जल्दी से कुछ करने का मन बनाया।

"फटाफट ठीक करो!"

"ब्रेक को साफ़ करो!"

तेज़ आवाज़ें अंधेरे को चीरने लगीं। "उन डिब्बों को वहां से हटाओ!"

चालक दल को पहले से ही काली रात के अँधेरे में ट्रेन 382 की रोशनी दिखाई दे रही थी।
उनके पास टूटी नली को ठीक करने का समय नहीं था।

जैसे-जैसे 382 की रोशनी पास आई चालक दल को डर लगने लगा। सीटी ने सन्नाटे को तोड़ा।
"अरे बाप रे! यह तो केसी जोन्स है!"
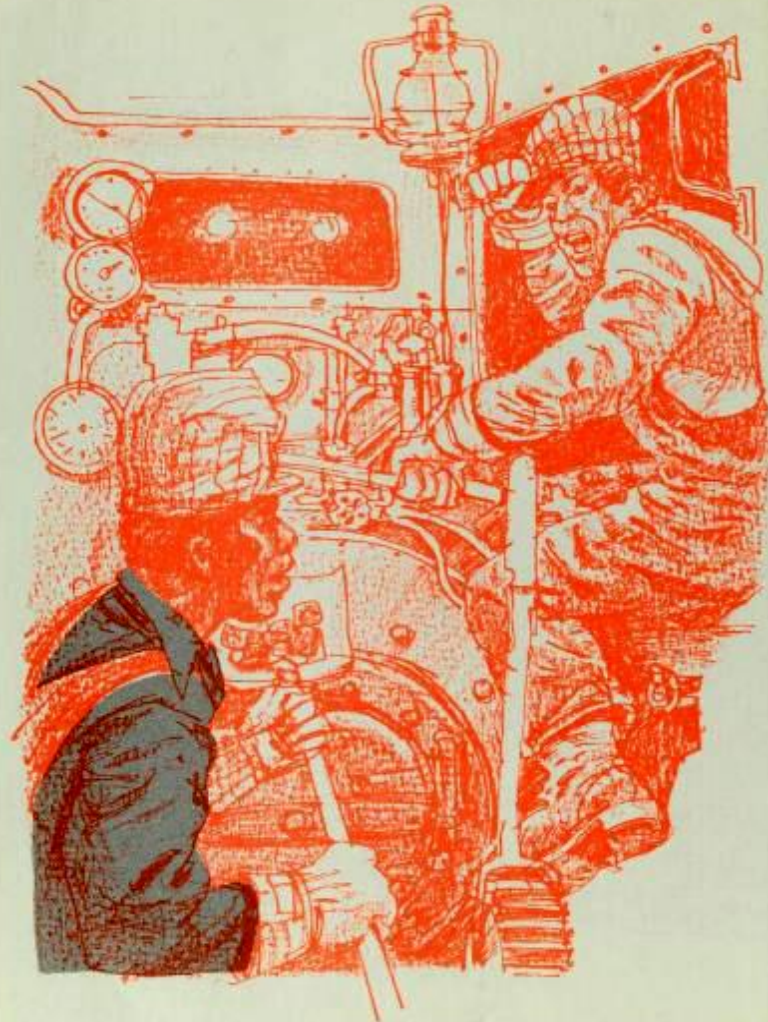
ट्रेन 382 की हेडलाइट तेज़ी से करीब आ रही थी। तब एक क्रू-मैन ने एक विस्फोटक उठाया - वो एक चेतावनी टारपीडो था। वो उसे लेकर पटरी पर दौड़ा। वो भय से स्तब्ध था। वो तेज नहीं दौड़ सकता था! उसके लिए समय भी नहीं था। ट्रेन बहुत नजदीक थी, यह वो जानता था। वो रेल की पटरी पर भागा और उसने रेलिंग पर टारपीडो को रखा।

जैसे ही ट्रेन 382 ने टारपीडो के ऊपर से गुज़री - एक शानदार विस्फोट हुआ - और केसी को आगे रुकी हुई ट्रेन की पूंछ वाली लाल लालटेन दिखाई दी।

सिम वेब ने भी उसी समय विस्फोट की रोशनी देखी।

"केसी!" फावड़ा हाथ में पकड़े हुए सिम वेब चिल्लाया.

केसी ने एयर ब्रेक लगाया - उनकी सीटी चीखी - पहियों से चिंगारियां उड़ीं।

"कूदो, सिम!" वह चिल्लाया। वह अब खड़ा होकर अपनी पूरी ताकत के साथ ब्रेक खींच रहा था।

अंधेरे में आगे वाली मालगाड़ी की टेल लाइट्स उनकी ओर तेज़ी से दौड़ रही थीं। इंजन के नीचे वाली कठोर ज़मीन चमक रही थी। सिम जमीन पर कूदा और उसने केसी पर एक हताश नज़र डाली।

"चलो केसी!"

पर केसी ने ब्रेक दबा कर रखा। "कूदो, सिम!" उसने फिर से आदेश दिया, और जैसे ही रात के अंधेरे में सिम बाहर कूदा, वैसे ही ट्रेन 382 मालगाड़ी के पिछले डिब्बे से जाकर बड़ी तेज़ी से टकराई।

धातु और लकड़ी के टुकड़े हवा में उड़ने लगे। बॉयलर से धमाकेदार भाप निकली। फिर मालगाड़ी के पिछले डिब्बे के टुकड़े-टुकड़े हो गए, और अन्य डिब्बों को भी भीषण नुक्सान पहुंचा। इस विस्फोट से डिब्बे पटरियों से छिटककर दूर जाकर गिरे।

कुछ ही क्षणों में, अँधेरे में लालटेनों के साथ मालगाड़ी चालक दल के लोग वहां पहुंचे। उन्हें कोई बड़ी दुर्घटना होने की उम्मीद थी। पर उन्हें 382 के ध्वस्त इंजन के पीछे के डिब्बे अभी भी पटरी पर खड़े दिखाई दिए। नसीब से कोई भी मुसाफिर नहीं मारा गया था। केसी पूरी तरह से ट्रेन को रोकने में सक्षम नहीं था। वह जानता था कि वो ऐसा नहीं कर सकता था।

लेकिन ब्रेक पर हाथ रखने से उसने ट्रेन को काफी धीमा कर दिया था जिससे लोगों की जान बच गई थी। अगर केसी भी सिम के साथ कूद जाता, तो दुर्घटना और भी बदतर होती। सिम वेब, ज़मीन पर छलांग लगाने के बाद बेहोश हो गया, लेकिन वो अभी भी जिंदा था।

उस दुर्घटना में केसी जोन्स की मौत हो गई।

उसके हाथ से अभी भी सीटी की डोरी लटकी थी।
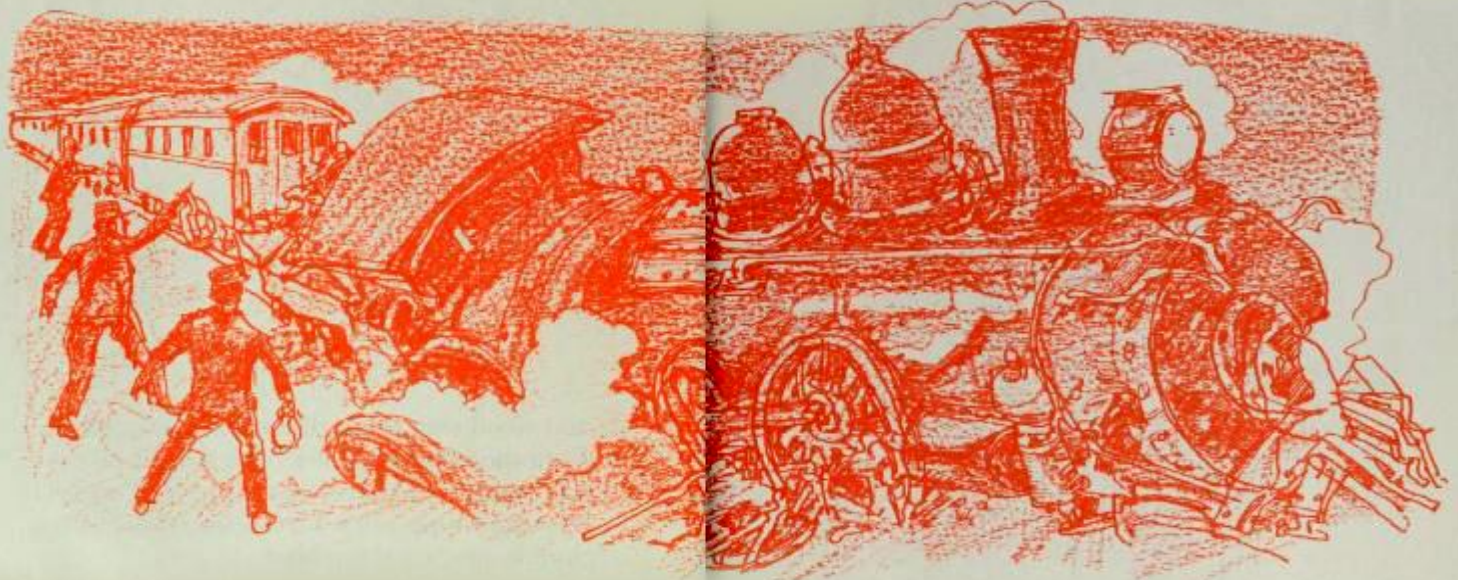
जो रेल कर्मचारी केसी जोन्स को जानते थे वे उसे बहुत चाहते थे। उन्होंने एक अच्छा मित्र खो दिया था।

केसी जोन्स की मौत के कुछ समय बाद, वर्कशॉप के एक कर्मचारी वालेस सौंडर्स ने केसी को श्रद्धांजलि देते हुए एक गीत लिखा। केसी हमेशा वालेस सौंडर्स की तारीफ करता था जिसे वालेस कभी भूल नहीं पाया। लोग आज भी उस गीत को सुनते हैं।

केसी जोन्स को लोग कभी नहीं भूलेंगे।

समाप्त